हिंदी साहित्य का इतिहास

साहित्य अपने भूगोल और समय के साथ देश–काल के भीतर जनता की स्थिति, आशा–आकांक्षा, उनकी चिंताओं और व्यवहार प्रणाली की अभिव्यक्ति करता है। इस प्रकार साहित्य एक प्रकार का समानांतर और सांस्कृतिक ऐतिहासिक अभिलेख भी होता है जिससे हम उस काल में घटित सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं से परिचित हो सकते हैं। हिंदी साहित्य का इतिहास भी इसी प्रकार अपने रचना काल में विद्यमान उपर्युक्त व्यवस्थाओं का एक सजीव प्रतिबिंब है। इसी क्रम में विभिन्न साहित्यकारों जैसे : जार्ज ग्रियर्सन, मिश्र बन्धुओं, रामचन्द्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेद्वी ने कालविभाजन का प्रयास किया परन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा वर्ष 1929 ई. में प्रकाशित ''हिंदी साहित्य का इतिहास'' में वर्णित उक्त कालक्रम ही सर्वाधिक मान्य है –

- वीरगाथा काल – 993 ई. से 1318 ई. तक
- भक्ति काल – 1318 ई. से 1643 ई. तक
- रीतिकाल – 1643 ई. से 1843 ई. तक
- आधुनिक काल – 1843 ई. से आगे

वीरगाथा काल (993–1318 ई.) : में हिंदी साहित्य में एक विशेष प्रवृत्ति पायी जाती है, इस काल के राजाश्रित कवि अपने आश्रयदाता राजा की पराक्रमपूर्ण युद्ध गाथाओं का वर्णन 'रासो' साहित्य के रूप में करते थे। आचार्य शुक्ल ने इन 12 पुस्तकों (विजयपाल रासो, हम्मीर रासो, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, खुमान रासो, बीसलदेव रासो, पृथ्वीराज रासो, जयचंद्र प्रकाश, जयमयंक जसचंद्रिका, परमाल रासो, खुसरो की पहेलियां और विद्यापति पदावली) के आधार पर आदिकाल का विवेचन तथा नामकरण किया।

भक्ति काल (1318–1643 ई.) : में मुख्य रूप से भक्ति विषयक काव्य रचे गए और इन काव्यों में उस कालावधि की धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि दिखती है। भक्तिकाल में ईश्वर के प्रति प्रेम, अनुराग और सर्मपण कविता की पृष्ठभूमि बनी। भक्ति काल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएं : कबीरदास (बीजक), सूरदास (सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी), मीराबाई, रसखान, तुलसीदास (रामचरितमानस), रामानंद आदि हैं।

रीतिकाल (1643–1843 ई.) : में अनेकों लक्षण ग्रंथों की रचना की गई। रीतिकाल का साहित्य अनेक अमूल्य रचनाओं का सागर है, इस काल की रचनाओं में शृंगारिक छंदों का समावेश हुआ। रीतिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएं : चिंतामणि (कविकुल कल्पतरु, शृंगार मंजरी), भिखारी दास (काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय), माखन (छंद विलास), बिहारी (बिहारी सतसई), भूषण (छत्रसाल दशक) आदि हैं।

आधुनिक काल (1843 ई. से आगे) : चूंकि इस दौर में भारत परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था अतः हमारे देश में उसी के अनुरूप हिंदी साहित्य में परतंत्रता के प्रतिरोध के रूप में राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई। हिंदी साहित्य में आधुनिकता के प्रारंभ से लेकर छायावाद शुरू होने तक नवजागरण प्रयास रचनाओं में स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं चाहे वह भारतेंदु के साहित्य में धन की लूट हो या चाहे मैथलीशरण गुप्त की कविताओं में देश में नारियों की स्थिति हो, यह सभी इस काल की कृतियों में देखने को मिलता है। इस काल में गद्य, पद्य के साथ–साथ समालोचना, कहानी, नाटक, उपन्यास व पत्रकारिता का भी विकास हुआ। इस काल के प्रसिद्ध रचियता निम्नांकित हैं :

समालोचक – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ. रामकुमार वर्मा, आदि

कहानी / उपन्यास लेखक – प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', निराला, भगवतीचरण वर्मा आदि

काव्य के क्षेत्र में यह छायावाद के विकास का युग है। पूर्ववर्ती काव्य वस्तुनिष्ठ था, छायावादी काव्य भावनिष्ठ है। इसमें व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों का प्राधान्य है। स्थूल वर्णन विवरण के स्थान पर छायावादी काव्य में व्यक्ति की स्वच्छंद भावनाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति हुई। स्थूल तथ्य और वस्तु की अपेक्षा बिंबविधायक कल्पना छायावादियों को अधिक प्रिय है। उनकी सौंदर्य चेतना विशेष विकसित है। प्रकृति सौंदर्य ने उन्हें विशेष आकृष्ट किया। वैयक्तिक संवेगों की प्रमुखता के कारण छायावादी काव्य मूलतः प्रगीतात्मक है। इस समय खड़ी बोली काव्यभाषा की अभिव्यक्ति क्षमता का अपूर्व विकास हुआ। जयशंकर प्रसाद, माखनलाल, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी, नवीन और दिनकर छायावाद के उत्कृष्ट कवि हैं।